प्रतीक झा 'ओप्पी'

ओपेनहाइमर की अलमारी

मुझे प्रिय है वह एकांत कमरा
और वह अलमारी भी
जिसके एक ओर सजी हैं
भौतिकी की जटिल, रहस्यमयी पुस्तकें
और दूसरी ओर पड़े हैं चुपचाप
सिगरेट के अनगिनत पैकेट।

मानव इतिहास में इन दोनों का योगदान
कुछ वैसा ही रहा है जैसे
पेड़-पौधों के जीवन में सूर्य की किरणें—
प्रकाश देती, जलाती भी।

कुछ विलक्षण आत्माओं ने इन्हें साथ लेकर
विज्ञान और अस्तित्व के द्वार खोले,
पर जब यह यात्रा अपने चरम पर पहुँची
तो उस शिखर पर केवल एक ही खड़ा दिखा—
परमाणु बम का पिता, ओपेनहाइमर।

धर्म बदला, बुराई नहीं

सारी गलती तो तुम्हारी ही है
दूसरों के बहकावे में आकर
तुमने अपना धर्म ही बदल लिया।

तुम तो भली-भांति जानते थे
भगवान राम ने
माता शबरी के जूठे बेर खाए थे
निषादराज को गले से लगाया था।
अरे भाई!
जिस सामाजिक बुराई को
हमें मिलकर मिटाना चाहिए था
तुमने उसी के कारण
अपना महान धर्म छोड़ दिया।

अब...
क्या होगा आगे तुम्हारे साथ—
यह तो ईश्वर ही जानें।